Golden Research Thoughts

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 8 | Feb - 2016

मौर्यकालीन मूर्तिकला का कलात्मक एवं सांस्कृतिक अध्ययन

डॉ. विजय कुमार

इतिहास विभाग,महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बिल्सी, बदॉयू।

शोध सारांश –

मौर्य–मूर्तिकला से तात्पर्य अशोक कालीन मूर्तिकला है। अशोक कालीन मूतिकला से ही भारतीय मूर्तिकला का क्रमबद्ध इतिहास आरम्भ होता है जो कि प्राप्त कला सामग्रियों पर आधारित है। मूर्तिकला के इतिहास में मौर्य मूर्तिकला कला का विशेष महत्व है। पूरा भारत ही मौर्य कालीन कला का क्षेत्र रहा है। मौर्य मूर्ति निर्माण के ज्ञान का एकमात्र साधन अशोक स्तम्भों के शीर्ष पर स्थित मूर्तियाँ हैं। अध्ययन एवं कला की दृष्टि से इसे तीन भागों में विभक्त कर लेना उपयुक्त एवं सुविधाजनक होगा – उल्टा कमल पुष्प, चौकी एवं पशु आकृतियाँ। उल्टा कमल पुष्प थम्भ के ऊपर कटिबन्ध की भांति एक अथवा दो किनारे दार रेखाओं के ऊपर कमल पुष्प उल्टे रूप में अंकित किया गया है। इस उल्टे पुष्प में पंखुड़ियों की रेखायें लहरदार है। इस प्रकार यह मूर्तरूप के स्थान पर यथार्थता का आभास दिलाता है। मौर्यकला के लेप को भारत की मौलिक प्रतिभा की उपज मानी जानी चाहिए। मौर्य युग के पूर्व ही इस लेप के समान चमकाने वाले लेप का वर्णन सूत्र काल के साहित्य में मिलता है। आपस्तम्ब श्रौतसूत में उल्लेखित है कि– लक्ष्णीकरणैः लक्ष्णी कुर्वन्ति। अर्थात् चिकना करने वाले पदार्थों से चिकना किया जाता है। बिहार प्रान्त के जिला भोजपुर (आरा) में मसाढ़ नामक गाँव से एक ऐसी कलाकृति प्राप्त हुई है जो टूटा सिंह शीर्ष है। यह एक ऐसी चौकी पर बना है जिसके किनारों पर यूनानी कटीली लता अर्थात् ऐकन्थस की पत्तियाँ उत्कीर्ण हैं। परन्तु ये ध्वस्त अवस्था में प्राप्त हुई हैं। इस कलाकृति पर मौर्य कालीन लेप होने के कारण यह अनुमान लगाया जाता है कि यह मूर्ति मौर्य कालीन है। चूंकि इस कृति पर यूनानी कटीली लता उत्कीर्ण है अतः इस पर विदेशी प्रभाव की झलक सी दिखने लगती है।

भारतीय मूर्तिकला के नमूने सैन्धव सभ्यता के बाद अशोक के ही काल में मिले हैं और वह भी एक निश्चित स्वरूप में अर्थात् स्तम्भ शीर्षों पर। 1500 ई०पू० से 322 ई०पू० तक एक कलाविहीन युग सा प्रतीत होता है। कला एक साधना है जो अभ्यास करने से ही सुधरता है। लम्बे कलाविहीन युग के उपरान्त मौर्य–युग आते ही समुन्नत कला का दर्शन निश्चित ही आश्चर्यचकित कर देनी वाली घटना है। तब भी मौर्यकालीन लोककला में यक्ष और यक्षिणियों की मूर्तियाँ, उस युग के लोकजीवन में पत्थर के प्रयोग को प्रस्तुत करती हैं। यद्यपि यह पूर्णतः नकारा नहीं जा सकता है कि मौर्य सभ्यता और संस्कृति के बीच विदेशी प्रभाव का असर नहीं हुआ है। सभ्यता आदन प्रदान से ही बढ़ती है। अशोक के पतन के साथ ही मौर्य कला के आदर्शों का समापन हो गया था। इसका वास्तविक कारण यह था कि यह कला न केवल राजकीय थी बल्कि दरबारी भी।

कूट शब्द – चौकी, स्तम्भ–पट्टिका, संकिसा, गजतमे, मधुवेल , पर्शिया , नन्दी और वर्द्धन।

अशोक स्तम्भों के शीर्ष पर स्थित उल्टे कमल के निर्माण का उद्देश्य प्रतीकात्मकतापूर्ण लगता है। शासक दण्ड के ऊपर कमल का अंकन समाज के प्रति राजा के हृदय की कोमलता का आभास हैं अशोक ने अपने अभिलेखों में कहा है कि समाज में अनेक लघुमंगल होते हैं जो जीवन में जन्म, मृत्यु आने, बलि आदि पर किया जाता है, वे महत्वहीन है। इस प्रकार अशोक ने समाज में इनको दूषित बताला है। कमल का एक अन्य नाम पंकज है अर्थात् पंक से निकलने वाला। कमल के पृष्ठ पर दो गोल रेखाओं का अंकन है, इसके ऊपर चौकी की आकृति बनी है। ये दोनों रेखांकन बटी हुई रस्सी की भाँति लहरदार है तथा सम्भवतः इनका अंकन सौन्दर्य हेतु किया गया होगा। स्तम्भशीर्ष के प्रस्तर खण्ड पर स्थित उल्टे कमल के पीठ पर एक चौकी का निर्माण किया गया। यह चौकी कमल पुण्य के पृष्ठ भाग से कुछ बाहर की ओर निकली हुई है। इसी पर शीर्षस्थ पशु बने हुई है। ये पशु खड़ी अथवा बैठी दोनों मुद्रा में निर्मित है। इस चौकी के निर्माण की पृष्ठभूमि में दो उद्देश्य ही सम्भव प्रतीत होता है, यातो कमल पुष्प के पृष्ठ और शीर्षस्थ पशु आकृक्तियों के बीच सौन्दर्य के लिए अथवा पशुओं के आधार के लिए। इस तथ्य का कारण यह है कि कमल पृष्ठ इतना छोटा है कि वह पशुओं के लिए आधार नहीं बन सकता था। इन पशुओं को संयोजन कमल पुष्प के ऊपर चौकी की सहायता द्वारा ही भली प्रकार से किया जा सकता है। इन चौकियों को स्तम्भ–पट्टिका भी कहा जाता है। इनकी बनावट दो प्रकार से प्राप्त होती है। बसाढ़ बखिरा, सासाराम आदि कुछ स्थानों से प्राप्त चौकी चौकार एवं अनलंकृत है जबकि अन्य स्थानों से प्राप्त चौकियां गोल और अलंकृत है। ऐसा प्रतीत होता है कि बखिरा की भाँति चौकी कला, विकास के प्रारंम्भिक चरण में निर्मित की गई होगी। ऐसा उनके नाटे स्तम्भ और कौशल रहित निर्मित पशु आकृक्तियों से भी ज्ञात होता है। इसके बाद बनी संकिसा, रमपुरवा, लौरिया नन्दगढ़, लौरिया अरराज, सारनाथ इत्यादि स्थानों को स्तम्भ पट्टिकाएं गोल हैं तथा इनके किनारे, उभरे हुए कटान बनाकर विभिन्न आकृक्तियों से अलंकृत किये गये हैं।

चौकी के ऊपर व नीचे दोनों ओर किनारीदार रेखा बनाई गई है। इनके बीच में जो उभरे हुए कटाव निर्मित किये गये हैं, उनमें नक्षत्रों द्वारा विविध आकृतियाँ उकेरी गई हैं। इन आकृतियों में प्रमुख आकृतियाँ हैं– दाना चुगते पांच हंस, कटीली पत्ती के साथ मधुबेल इत्यादि। ये सभी अंकन जहाँ एक ओर सजावट की दृष्टि से किये गये हैं वही दूसरी ओर बौद्धधर्म की प्रतीकात्मकता को भी व्यक्त करता है। शीर्षस्थ पशुः उल्टे कमल पुष्प के पृष्ठ पर स्थित चौकी के ऊपर पशुओं की आकृतियां बनायी गयी हैं। यह चौकी पशुओं के लिए एक प्रकार से भूमि अथवा आधार का काम करती हैं। इन पर पशु आकृक्तियां सामान्जस्य में बनाई गयी हैं परन्तु असंतुलित रुप में भी बनी हैं। जैसे बाखिरा के सिंह का पिछला भाग चौकी के बाहर निकला है तथा लौरिया नन्दगढ़ के सिंह के आगे का भाग बाहर निकला है। परन्तु रमपुरवा का सिंह एवं वृषम तथा सारनाथ के सिंह चौकी से पूर्ण सामन्जस्य बनाये हुए खड़े हैं। शीर्षस्थ पशुओं में हस्ति, अश्व, वृषभ तथा सिंह की ही आकृतियाँ मिलती हैं वो भी कहीं खड़ी और कहीं वैठी हुई मुद्रा में। खड़ी मुद्रा की आकृतियां भी दो प्रकार की हैं कभी ये अकेली हैं और कहीं उनकी संख्या चार हैं साँची तथा सारनाथ के स्तम्भ शीर्ष पर चार सिंह एक साथ बनाये गये जबकि अन्य स्तम्भ शीर्षों पर एक ही पशु बना है।

शीर्षस्थ पशुओं के निर्माण शैली और कौशल में एक विकास क्रम का आभास होता है। उदाहरण के लिए बाखिरा का सिंह जहाँ भद्दा है वहीं सारनाथ का सिंह तथा रमपुरवा का वृषम को देखने से अत्यन्त उन्नत कला का बोध होता है। विकास क्रम में बासाढ़ बाखिरा, संकिसा, धौली, कालसी, लौरिया नन्दनगढ़, रमपुरवा (सिंह शीर्ष), साँची, रमपुरवा (वृषम शीर्ष) तथा सारनाथ के स्तम्भ तक कला कौशल, शैली व सौन्दर्यता का क्रमिक विकास दृष्टिगोचर होता है। बसाढ़ स्तम्भ बिहार प्रान्त के मुजफ्फरपुर नामक जिले में बसाढ़ नामक ग्राम में स्थित हैं इसकी चौकी अनलंकृत व चौकोर है तथा इसके ऊपर एक बैठे सिंह का मूर्तन किया गया है जो बहुत ही भद्दा और अपरष्कृति है। अशोक के अन्य स्तम्भ शीर्षस्थ पशुओं की तुलना में यह सिंह भौड़ा लगता है। सिंह तथा चौकी के बीच सामन्जस्य का अभाव सा है। इसका पिछला भाग न केवल बाहर निकला है बल्कि इसके रुप में स्वाभाविकता का अभाव है। पुष्प व थम्भ दोनों अलग–अलग अंक प्रतीत होते हैं। शीर्षस्थ पशुओं में हस्ति, अश्व, वृषभ तथा सिंह की ही आकृतियाँ मिलती हैं। साँची तथा सारनाथ के स्तम्भ शीर्ष पर चार सिंह एक साथ बनाये गये जबकि अन्य स्तम्भ शीर्षों पर एक ही पशु बना है।

उत्तर प्रदेश में कालसी नामक स्थान पर अशोक का चौदहवाँ शिलालेख स्थित है। इसी शिलाखण्ड के पास धौली के समान चट्टान पर एक हाथी को उत्कीर्ण किया गया है। इस हाथी के पेट पर अशोक कालीन ब्राहमी लिपि में गजतमे अंकित है। गजतमे अर्थात श्रेष्ठ हस्ति ! यह उभरे कटाव में बना है। इसकी पूँछ कुछ उठी है तथा शरीर भारी है। इस हस्ति के चारों पैर सीधे हैं परन्तु आगे का दाहिना पैर कुछ आगे निकला हुआ है। हाथी के दाँत बाहर की ओर निकले हैं तथा सूंढ़ में कुछ पकड़ कर लपेटे हुए हो तथा उसे ऊपर की ओर

उठा रहा हो। हस्ति के अधिकतर अंगों का निखार स्पष्ट है। यह निर्माण कौशल तथा शैली की दृष्टि से संकिसा और धौली के हस्ति के समान है। बिहार प्रान्त के चम्पारन जिले में लौरिया नामक ग्राम से एक अशोक स्तम्भ प्राप्त हुआ है। इस स्तम्भ पर एक सिंह उकडूं (उठन्त) स्थित में बैठा हुआ है। यह सिंह दाना चुगते हुए हंसो वाली चौकी पर बैठा है। सिंह का मुँह सामने है तथा यह पीठ ताने हुए बैठा है। चम्पारन जिले से ही रमपुरवा नामक ग्राम से एक सिंह की मूर्ति प्राप्त हुई है। यह सिंह बैठी अवस्था में है किन्तु लौरिया के विपरीत इस सिंह का मुख स्वाभाविक स्थिति में नीचे की ओर लटका है परन्तु शरीर की बनावट लौरिया नन्दगढ़ के सिंह के समान अत्यन्त रुचिकर है। पंजों पर बैठे इस सिंह के आयाल लहराते हुए हैं, शरीर पुष्ट तथा मांसल हैं। सिंह, दाना चुंगते हुए हंस युक्त चौकी पर स्थित है। चौकी व सिंह के बीच पूर्ण सामन्जस्य है। अतः लौरिया के विपरीत रामपुरवा के सिंह में कौशल की परिपक्वता अधिक है। इस प्रकार यह विकास का तृतीय चरण है।

मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में सांची के महास्तूप के तोरण के निकट स्थित अशोक स्तम्भ के शीर्ष भाग पर चार सिंह हैं। ये चारों सिंह पीठ से पीठ मिलाये खड़े हुये हैं। ये सिंह पूर्णतः स्वाभाविक व प्राकृतिक रुप में खडे हैं। ये दाना चुगते हुए युगल तथा मधुवेल युक्त गोल चौकी पर खड़े हैं। इन सिंहों के शरीर की मॉस–पेशियों का उभार स्पष्ट है। ये सिंह चौकी के साथ पूर्ण सामन्जस्य की स्थिति में है। इन शेरों का मुँह टूट गया है। बिहार के चम्पारन जिले से ही एक अन्य स्तम्भ रमपुरवा नामक ग्राम से प्राप्त हुआ है। यह बैल स्तम्भ की चौकी के ऊपर सहज व प्राकृतिक रुप में खड़ा है। चौकी पर कटीली पत्ती व मधुवेल अंकित है। वृषभ के उठते कान, पुष्ठ शरीर, सौम्य मुखाकृति एवं खुली आँखे अत्यन्त स्वाभाविक है। इसके मॉसल और भारी भरकम अंग, लटकते लोर, पैरों का स्वाभाविक उतार चढ़ाव, खुरों का फटा भाग व प्राकृक्तिक नथुने वृषभ को जीवन्त रुप में प्रस्तुत करते हैं। मूर्तिकार की कुशलता का सर्वोत्तम परिचायक इस कृति मे उसके द्वारा वृषभ व चौकी के बीच सामन्जस्य बैठा देना है। वृषभ का एक भी अंग चौकी के बाहर नहीं निकला है साथ ही शीर्षस्थ खण्ड व थम्भ में भी पूर्ण तालमेल दृष्टिगोचर है। उत्तर प्रदेश प्रान्त के वाराणसी जिले में सारनाथ नामक स्थान पर अशोक का एक विशिष्ट स्तम्भ मिला है। यह साँची के सिंह शीर्ष के समान है। इस स्तम्भ की चौकी गोल है जिस पर चार बड़े सिंह की मूर्तियों का मूर्तन किया गया है। ये चारों सिंह चारों दिशाओं में मुंह किए पीठ से पीठ मिलाए खड़े हैं। गतिमान स्थिति में चार पशु चौकी पर अंकित किए गये हैं। कमान की तरह तनी हुई पीठवाला दौड़ता घोड़ा सरपट दौड़ने की स्थिति में अंकित है। इसकी पूंछ स्वाभाविक स्थिति में उठी हुई है। इसके आगे के पैर फैले हुए तथा ऊपर की ओर उठे हुए हैं। अश्व के पीछे के पैर अत्यन्त गतिशील होकर पीछे की ओर मुड़े है। अश्व का शरीर मॉसल और पुष्ट है। वृषभ दूसरा अंकित पशु है। इस मस्त वृषभ का शरीर भारी–भरकम, मॉसल, पुष्ट व सुगठित है परन्तु यह चौतन्य स्थिति में है। इसके चारों पैर गतिमान स्थिति में है। इस गतिशील स्थिति का बोध इसकी तनी पूँछ, उठे कान, चेतन मुख मुद्रा तथा लटकते गले की मॉंसल लोर से होता है।

चौकी पर अंकित तीसरा पशु मस्त गज है। यह प्राकृतिक तन, मस्तक व भारी शरीर के साथ आगे की ओर गतिमान प्रतीत होता है। इसके पैर गतिशील स्थिति दर्शाते हुए उत्कीर्ण किए गये हैं जो इसकी गतिमान स्थिति का ज्ञान कराती हैं। इन चारों पशुओं के बीच में चक्र बना हुआ है जिसमें चौबीस आरी रेखायें हैं। इसके द्वारा चारों पशुओं की स्थिति अलग–अलग हो गई हैं। इस चक्र को अशोक चक्र की संज्ञा प्रदान की गई है। स्तम्भ शीर्ष की चौकी पर चार सिंहों का उकडू स्थिति में मूर्तन हुआ है। सभी सिंहों की मुखाकृति क्रोध के भाव को दर्शाती है। सिंहों के नसों और मांसपेशियों का उभार, पंजों का स्वाभाविक उतार–चढ़ाव एवं तने हुए पैर गुर्राये हुए सिंहों की प्रकृति का ज्ञान कराते हैं। कला का ऐसा निखार एवं प्रस्तुति, शरीर और मनोभावों का तीक्ष्ण तालमेल तथा निर्माण कुशलता अवर्णनीय है। सिंहों को कोई भी अंग चौकी से बाहर नहीं निकला है। उसी प्रकार ये सिंह स्तम्भ के अन्य भागों से सामन्जस्य बनाये हुए हैं। इन सिंहों के ऊपर एक चक्र का भी निर्माण किया गया था जो कालान्तर में टूट गया। सभी कलाविदों ने इसे मौर्यकला की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि माना है। निस्सन्देह मूर्तिकार ने इसके निर्माण में न केवल अपनी छेनी और हथौड़ी का प्रशंसनीय ढंग से प्रयोग किया है अपितु उसने कौशल के चरम का आभास भी कराया है। इसके किसी कार्य में चूक नहीं मिलती है । ऐसे में कोई भी विचारक यह सोचने को वाध्य हो जाता है कि या तो मूर्तिकला के कलाकार विदेशी रहे होंगें या इस कला का विकास विदेशी प्रभाव के संपर्क में हुआ होगा।

प्राचीन काल में भारतवर्ष का सम्पर्क पश्चिम के दो देशों ईरान और युनान के साथ था। ये दोनों मौर्य साम्राज्य के पूर्व में थे। अपनी–अपनी सांस्कृतिक विरासत द्वारा दोनों देशों ने एक दूसरे पर प्रभाव डाला था। अतः स्मिथ महोदय के अनुसार, मूर्तिकला में अचानक पत्थर का व्यवहार बहुत अंशों में विदेशी, सम्भवतः पर्शिया

के प्रभाव का परिणाम है। विदेशी प्रभाव की विचारधारा का आधार है कि मौर्य मूर्तिकला एक लम्बे अन्तराल के पश्चात् अस्तित्व में आयी। परन्तु यह विदित है कि हड़प्पा सभ्यता से प्रारम्भ मूर्तिकला इस लम्बे अन्तराल में मरी नहीं थी बल्कि लकड़ी पर बनायी जाती थी। इस प्रकार समय के साथ यह नष्ट होती गयी थी। किन्तु यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि लकड़ी का कारीगर पत्थर में अचानक समुन्नत कला का दर्शन नहीं करा सकता है। ज्ञातव्य है कि मौर्य कला के पूर्व पत्थरों को व्यवहार में लाने के प्रमाणों को अभाव सा है। सम्भव है कि भारत का उस काल में यूनान और पर्शिया से सम्पर्क होने से, भारत में विदेशी नागरिक बड़ी संख्या में रहते थे, जिनमें कुछ कलाकार ऐसे भी होंगे जो मूर्ति निर्माण में निपुण होंगे। उन्होंने ही मौर्य मूर्तिकला को समुन्त किया होगा। परर्सिपीलस में खड़े स्तम्भों पर पशुआकृतियों का मूर्तन हुआ है। सम्भवतः इसका अनुकरण अशोक के सतम्भ–शीर्ष पर किया हुआ है। मौर्य स्तम्भ शीर्ष पर रस्सीदार रेखा, कटीली पत्ती, यूनानी पौधा एकेंथस और उसकी पत्ती की आकृतियाँ मिलती हैं जो मौर्य मूर्तिकला पर यूनानी प्रभाव को व्यक्त करती है। इस बात की सम्भावना व्यक्त की गयी है कि मौर्य कालीन लेप अखमेनियन भवनों पर भी मिलती है।

मौर्य साम्राज्य के पतन उपरान्त मौर्य कला का भी पतन होने के पीछे शायद यही कारण रहा होगा कि मौर्य साम्राज्य से विदेशी लोग वापस जाने लगे होंगे। इस सन्दर्भ में निहार रंजन रे महोदय ने कहा है कि, मौर्य कला कोमल वनस्पतियों को सुरक्षित रखने वाले शीशे के कृत्रिम भवन में उपजी और पनपी। साथ ही मौर्य साम्राज्य के अन्त के साथ कृत्रिम भवन ढह गए और भारतीय वातावरण में वह पौधा सूखकर नष्ट हो गया। भारत में गाय के दुम की आकार के खम्भे पर उल्टा कमल अंकित है जो इरानी कला की तुलना में अधिक स्वाभाविक है एवं अतिकोमल ढंग से उत्कीर्ण है। इरानी आदर्श से भिन्न भारतीय नालयुक्त कमल का आदर्श बोधत्व है। कमल पुष्प प्रतीक रूप में पुरातन काल से ही प्रयोग किया जाता रहा है। ईरानी खम्भों पर युग्म में चार पशुओं की पीठ सटी मूर्तियों को मूर्तन किया गया है। ये मूर्तियाँ अपने आधार से मेल नहीं खाती हैं। इसके विपरीत अशोक स्तम्भ में ऐसा नहीं है। ईरानी शीर्षस्थ पशुओं में अश्व या विचित्र अभावनीय पशु है। इसके विपरीत मौर्य कला में अभावनीय पशु है ही नहीं। मौर्य स्तम्भ में अश्व के अतिरिक्त हाथी, बैल और सिंह भी अंकित है। इन पशुओं का प्रागैतिहासिक काल से ही भारत में महत्व रहा है तथा ये पशु भारतीय भावना और आर्दश के भी प्रतीक हैं। सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि जहाँ एक ओर ईरानी कला पूर्णतः पाषाण कला है वहीं मौर्य पाषाण कला होते हुए भी काष्ठ कला पर आधारित है। ईरानी स्तम्भ चौकी पर खड़े हैं जबकि मौर्य स्तम्भ बिना चौकी या आधार के हैं। ईरानी स्तम्भों को अनेक खण्डों में जोड़कर बनाया गया है परन्तु मौर्य स्तम्भ एकाश्मक हैं। इस प्रकार मौर्य कला पर विदेशी प्रभाव का आरोपण निराध गार–सा प्रतीत होता है।

सैन्धव काल से ही मूर्तिकला जन–मानस में लोकप्रिय रही है। लोक कला के रूप में सम्पूर्ण जन–साधारण विद्यमान होता है जिसकी प्रस्तुति मौर्य युग में पाषाण मूर्तियों से पर्याप्त रूप में हो जाती है। मौर्य काल को दो पुरूषाकार यक्षों की मूर्तियां पटना से मिली हैं। लेप लगी इन मूर्तियों में से एक सिर विहीन है। इन्हें देखने से स्पष्ट होता है कि ये तहमद की तरह लूंगी बांधे सम्मुख दर्शन की मुद्रा में खड़ी हैं। कांखा से होती हुई सिलवर दार चादर बदन पर रक्खी है। शरीर भारी–भरकम है। पेट गोल तथा बाहर की ओर निकला है। इनके अंग मांसल तथा पैर अधिक लम्बे हैं। इनके पीठ पर ब्राह्मी लिपि में लेख लिखा है। संभावना व्यक्त की जाती है कि ये दोनों यक्ष मूर्तियां नन्दी और वर्द्धन नामक दो यक्षों की है जो निन्दवर्द्धन नगर के स्थानीय देव थे। तृतीय आयाम की स्थिति में बनाई गई इन यक्ष मूर्तियों की पीठ को गढ़ा नहीं गया है सम्भवतः कलाकारों ने पुरानी काष्ठ शैली में ही दीवार से सटा कर रखने के लिए इन्हें ऐसा बनाया गया होगा। यक्ष–यक्षिणीयों की प्रतिमाओं की श्रेणी में मथुरा जिले के परखम नामक ग्राम से एक यक्ष मूर्ति मिली है, जिसे मणिभद्र कहा गया है। मथुरा जिले यक्ष–यक्षिणीयों की प्रतिमाओं की श्रेणी में मथुरा जिले के परखम नामक ग्राम से एक यक्ष मूर्ति मिली है, जिसे मणिभद्र कहा गया है। मथुरा जिले के बढ़ौदा ग्राम से एक यक्ष मूर्ति मिली है तथा झींग–का–नगरा ग्राम से एक यक्षी की मूर्ति मिली है। पटना के दीदारगंज से चामर ग्राहिणी यक्षी की मूर्ति मिली है। ऐसे ही अनेकों स्थलों से मूर्तियों का मिलना मौर्य कालीन जन–मानस की भावना को व्यक्त करता है। स्पष्ट है कि मौर्य मुर्तिकला केवल राजकीय कला नहीं थी।

सन्दर्भिका :–

1. डा० डी०एन. झा एवं के०एन० श्रीमाली, प्राचीन भारत का इतिहास।
2. वी०ए० स्मिथ, आर्ली हिस्टर्टी ऑफ इण्डिया।
3. रायकृष्ण दास, भारतीय मूर्तिकला।

4. बी०ए० स्मिथ, हिस्ट्री ऑफ फाइन आर्टस इन इण्डिया एण्ड सिलोन।
5. रोलौं बेन्जामिन, आर्ट आर्कीटेक्टचर ऑफ इण्डिया।
6. नीहार रंजन राय, मौय तथा मौर्यात्तर कला।
7. डा० रूदल प्रसाद यादव, प्राचीन भारतीय कला।
8. आर०के० मुखर्जी प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति।
9. भगवतशरण उपाध्याय , भारतीय कला एवं संस्कृति की भूमिका।
10. वी.एस. अग्रवाल ,भारतीय कला।
11. शिवस्वरुप सहाय , भारतीय कला।
12. डा० आर०डी० बेनर्जी, द एज ऑफ द इम्पीरियल गुप्ताज।
13. डा० ए०के० कुमारास्वामी, हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एण्ड इण्डोनेशियन आर्ट।
14. डा० मैक्समूलर, इण्डिया व्हाट केन इट टीच अस।
15. आर०पी० चन्दा, द बिगनिंग ऑफ आर्ट इन ईस्टर्न इण्डिया विद स्पेशल रिफरेन्स टू स्कलचर इन इण्डियन म्यूजियम।